B.A. History Hon's, Part: II
Paper: III, Unit: II ; Date: 3.11.2020 Lecture No. 2
Session: गुरु नानक देव

मध्यकाल के उत्तर भारत में कबीर दूसरे महान निर्गुण संत गुरु नानक देव महाराज थे, जिन्होंने सिक्ख पंथ की आधारशिला रखी। नानक पर कबीर का गहरा प्रभाव था, किन्तु उन्होंने कबीर के विपरीत एक ऐसे अनुशासित एवं उग्र पंथ की नींव रखी, अपने पंथ की रक्षा के लिए जिसके अनुयायियों ने मुगल बादशाहों से लम्बी लड़ाई ही नहीं लड़ी, अपितु अंततः एक राजनीतिक पहचान भी बनायी।

नानक का जन्म पंजाब के एक सुखी व्यापारी परिवार में हुआ था। इनका जीवन काल 1469 से 1539 के बीच माना जाता है। नानक ने अनेक तीर्थों की यात्रा की थी और सामाजिक-धार्मिक पाखंडों तथा कुरीतियों को नजदीक से देखा था। मूर्ति पूजा, पुरोहितों-पंडों का आडम्बर और धार्मिक-सामाजिक उत्पीड़न के विरुद्ध इनको पैदा हुए आक्रोश एवं विक्षोभ ने नानक को एकेश्वरवादी निर्गुण सन्त बना दिया और इन्होंने लगातार प्रवास में रहकर अपने विचारों का प्रचार-प्रसार किया, जिनके संकलित रूप को शबद या शब्द कहा जाता है। अंत में इन्होंने पंजाब में गुरुदासपुर के निकट आश्रम (डेरा) स्थापित कर जीवन के शेष वर्षों में अनुयायियों को उपदेश देने में बिताए। इनके आश्रम को डेरा बाबा नानक कहा जाता है, जो आज एक नगर के रूप में विकसित हो चुका है। इनके निर्गुण सीखों अर्थात 'शबद' को 1604 ई० में सिक्खों के पाँचवे गुरु अर्जुन देव ने संकलित किया, जिसे 'आदि ग्रन्थ' कहा जाता है। बाद में दसवें सिक्ख गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने कुछ शबद जोड़े और इस तरह आदि गुरु ग्रन्थ का परिवर्द्धित रूप ही सिखों का पवित्रतम धर्म ग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहिब के नाम से जाना जाता है, जिसके आदि रूप की रचना नानक की है।

कबीर के स्वभाव के विपरीत नानक सौम्य, शान्त, सहनशील और संयत प्रकृति के सन्त थे। यही कारण है कि इनके शबद या सीख की भाषा अत्यन्त ही शिष्ट और शुद्ध है। बिना शब्द वर्णों की वर्षा किए इन्होंने सभी प्रकार के कुविचारों, कुसंस्कारों, दुराचारों और दुष्प्रवृत्तियों का विरोध ठोस तर्क के आधार पर शिष्ट भाषा में किया। इन्होंने बिल्कुल ही तीखी सरल भाषा में मूर्तिपूजा का तर्कपूर्ण खंडन किया और धार्मिक आडम्बरों तथा पाखंडों से रहित सरल जीवन जीने का संदेश दिया, जिसका पंजाब के हृदय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। नानक का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में अलौकिक शक्ति अन्तर्निहित होती है, जिसकी पहचान कर उसका अधिकतम सदुपयोग करते हुए यदि मनुष्य ईश्वर में लीन रहता है तो वह आध्यात्मिक और भौतिक सुखों का सर्वाधिक लाभ प्राप्त करता है। नानक ने एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में धर्म का संदेश देकर एक पंथ ही नहीं अपितु एक ऐसे कर्मठ कौम का भी निर्माण किया, जो आज दुनियाँ में एक उद्यमी एवं परिश्रमी समुदाय के रूप में जाना जाता है।

नानक ने कबीर ही नहीं अपितु इस्लाम से भी गहरी प्रेरणा प्राप्त की थी। इस्लाम के भाईचारे, प्रेम और मानवतावादी पक्षों को नानक ने ग्रहण कर न केवल हिन्दू-मुस्लिम समन्वय का पक्ष प्रशस्त किया, बल्कि पंजाब में शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के परिवेश के निर्माण का मार्गदर्शन भी किया। नानक का कहना था कि जीवन के उच्च आदर्शों को स्थापित करने के लिए सभी पंथों के बीच समन्वय आवश्यक है। जाहिर है कि नानक समन्वयवादी निर्गुण संत थे।

नानक द्वारा प्रवर्तित पंथ बीतते समय के साथ परिवर्तित होता रहा। पंजाब, कश्मीर, जम्मू और हिमाचल के क्षेत्रों में सिक्ख धर्म

का व्यापक प्रसार हुआ। गुरु अर्जुनदेव और गुरु गोविन्द सिंह जैसे महान सिक्ख गुरुओं ने नानक द्वारा बोये गए बीज को एक विशाल वटवृक्ष में परिणत कर दिया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जामनगर